L. A. Coser Closed Open

परिवर्तन की शाश्वत प्रकृति को स्वीकार करते हुए मकीवर[1] एवं पेज (R. M. MacIver and C. H. Page) ने स्पष्टत: कहा है कि सामाजिक संरचना में निरन्तर परिवर्तन, विकास, अपकर्ष, नवीनीकरण की सम्भावना पायी जाती है तथा बिलकुल प्रतिकूल परिस्थिति में भी समायोजित होने की क्षमता पायी जाती है। इस प्रकार समय के साथ उसमें भारी परिवर्तन सम्भव होता है।[2]

यह सामाजिक परिवर्तन समाज के आन्तरिक तथा बाहरी या संरचनात्मक (Structural) दोनों पक्षों में हो सकता है। किसी युग के आदर्श एवं मूल्य में अगर पिछले युग के मुक़ाबले कुछ नयापन या परिवर्तन दिखाई पड़े तो उसे आन्तरिक परिवर्तन कहेंगे और अगर किसी सामाजिक अंग, जैसे– परिवार, वर्ग, जातीय हैसियत, समूहों के स्वरूपों एवं आधारों में परिवर्तन परिलक्षित हो, तो उसे संरचनात्मक परिवर्तन कहेंगे। लेकिन यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि समाज के जो बुनियादी सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्त्व हैं, जैसे– परिवार, वर्ग, राजनीति, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ– वे सदैव मौजूद रहते हैं। वे समाज के स्थायी तत्त्व हैं। जो परिवर्तन होता है, वह इसके बाह्य स्वरूप और आन्तरिक अन्तर्वस्तु (Contents) में होता है। व्यापक दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि समाज की प्रत्येक संरचना, संगठन एवं सामाजिक सम्बन्ध में निरन्तर परिवर्तन होता है।

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। मध्यकालीन समाज प्राचीनकाल से और आधुनिक समाज मध्यकालीन समाज से तुलनात्मक रूप में विश्वस्तर पर काफी भिन्न है। यह बात दूसरी है कि सामाजिक परिवर्तन की गति कभी भी एक समान नहीं रही, फिर भी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया की गति कमोवेश हर काल में चलती रहती है। ऐन्थनी गिडेन्स (Anthony Giddens, 1998) का कहना है कि लगभग 18वीं सदी से सामाजिक परिवर्तन की गति मानव के इतिहास में सापेक्ष रूप से सबसे तेज रही है और 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक परिवर्तन की गति कुछ और भी ज्यादा तेज हो गयी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तरक्की ने सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज करने में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, ऐसा लैन्डीस (Landes, 1969: 5) के साथ-साथ अन्य कई विद्वानों का भी मानना है।

'सामाजिक परिवर्तन' समाजशास्त्र के क्षेत्र में प्रारम्भ से लेकर आज तक एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। ऑगस्त कौंत (Auguste Comte)[3] एवं 19वीं सदी के अन्य समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन जैसे विषयों में इतनी

---

1. R. M. MacIver का शुद्ध उच्चारण सिर्फ **'मकीवर'** ही है। अन्य सभी उच्चारण, जैसे– मैकाईवर या मेकाइवर निश्चित रूप से गलत हैं।
2. "The social structure is subject to incessant change, growing, decaying, finding renewal, accommodating itself to extremely variant conditions and suffering vast modifications in the course of time." —R. M. MacIver and Charles H. Page, **Society**, Macmillan India Limited, New Delhi, 1985, p. 508.
3. Auguste Comte– इस नाम का सही उच्चारण **'कौंत'** है, बाकी सभी उच्चारण, जैसे- कुम्ट, कॉमेट इत्यादि, सभी गलत हैं।

Scanned with CamScanner

अधिक रुचि दिखाई कि समाजशास्त्र के प्रारम्भिक काल में ही सामाजिक परिवर्तन के बहुत सारे सिद्धान्त आ गए। उन सभी सिद्धान्तों में ऐतिहासिक भौतिकवाद (Historical Materialism) एवं उद्विकासीय सिद्धान्त (Evolutionary Theory) सबसे अधिक लोकप्रिय रहे हैं। आज समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों के प्रवर्त्तक मुख्य रूप से इन्हीं दो सम्प्रदायों में कहीं-न-कहीं रखे जाते हैं।

जिटलिन (I. M. Zeitlin, 1981: 352) ने बताया है कि सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन का सम्बन्ध उन प्रक्रियाओं से है जिनके द्वारा समाज और संस्कृति में परिवर्तन आता है (The study of social change is concerned with the processes through which societies and cultures are transformed.)। इनके इस विचार से ऐसा लगता है कि सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत हम मुख्य रूप से तीन तथ्यों का अध्ययन करते हैं– (क) सामाजिक संरचना में परिवर्तन, (ख) संस्कृति में परिवर्तन एवं (ग) परिवर्तन के कारक। सामाजिक परिवर्तन के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ कुछ प्रमुख परिभाषाओं पर विचार करेंगे।

मकीवर एवं पेज ने अपनी पुस्तक **Society** में सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए बताया है कि "समाजशास्त्री के रूप में हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्धों से है। इन सम्बन्धों में जो परिवर्तन आता है मात्र उसी को हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे।"[4] डेविस (K. Davis) के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक संगठन, अर्थात् समाज की संरचना एवं प्रकार्यों में परिवर्तन है। उनके शब्दों में, "सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य ऐसे प्रत्यावर्तन से है, जो सामाजिक व्यवस्था में उत्पन्न होता है, जिसे समाज की संरचना और प्रकार्य के रूप में जाना जाता है।"[5] एच. एम. जॉनसन (H. M. Johnson) ने सामाजिक परिवर्तन को बहुत ही संक्षिप्त एवं अर्थपूर्ण शब्दों में स्पष्ट करते हुए बताया है कि मूल अर्थों में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ संरचनात्मक परिवर्तन है। उनके (Johnson, 1983: 626) ही शब्दों में, 'बुनियादी अर्थ में सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय सामाजिक संरचना में परिवर्तन है।' (In its basic sense, then, social change means change in social structure.) जॉनसन की तरह गिडेन्स (1998: 521) ने कहा है कि सामाजिक परिवर्तन का अर्थ बुनियादी संरचना (Underlying Structure) या बुनियादी संस्था (Basic Institutions) में परिवर्तन है।

ऊपर की परिभाषाओं के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि परिवर्तन एक व्यापक प्रक्रिया है। समाज के किसी भी क्षेत्र में विचलन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। विचलन का अर्थ यहाँ खराब या असामाजिक नहीं है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, भौतिक आदि सभी क्षेत्रों में होनेवाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। यह विचलन स्वयं प्रकृति के द्वारा या मानव-समाज द्वारा योजनाबद्ध रूप में हो सकता है। परिवर्तन या तो समाज के समस्त ढाँचे में आ सकता है अथवा समाज के किसी विशेष पक्ष तक ही सीमित हो सकता है। परिवर्तन एक सार्वकालिक घटना है। यह किसी-न-किसी रूप में हमेशा चलनेवाली प्रक्रिया है। परिवर्तन क्यों और कैसे होता है, इस प्रश्न पर समाजशास्त्री अभी तक एकमत नहीं हैं। इसलिए परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण किन्तु जटिल प्रक्रिया का अर्थ आज भी विवाद का एक विषय है। किसी भी समाज में परिवर्तन की क्या गति होगी, यह उस समाज में विद्यमान परिवर्तन के कारणों तथा उन कारणों का समाज में सापेक्ष महत्त्व क्या है, इस पर निर्भर करता है। सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए यहाँ इसकी प्रमुख विशेषताओं की चर्चा अपेक्षित है।

---

4. "Our direct concern as sociologists is with social relationships. It is the change in these relationships which alone we shall regard as social change." —R. M. MacIver and Charles H. Page, **Society**, Macmillan India Limited, New Delhi, 1985, p. 511.
5. "By social change is meant only such alternations as occur in social organization, that is, in structure and functions of society." —Kingsley Davis, **Human Society**, Macmillan, New York, 1949, p. 622.

Scanned with CamScanner

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ (Characteristics of Social Change)

ऊपर वर्णित परिभाषाओं एवं विचारों को स्पष्ट करने के लिए सामाजिक परिवर्तन की विशेषताओं पर विचार करना जरूरी है, जो इस प्रकार हैं–

(1) सामाजिक परिवर्तन एक **विश्वव्यापी प्रक्रिया (Universal Process)** है, अर्थात् सामाजिक परिवर्तन दुनिया के हर समाज में घटित होता है। दुनिया में ऐसा कोई भी समाज नज़र नहीं आता जो दीर्घ काल तक स्थिर रहा हो या स्थिर है। यह सम्भव है कि परिवर्तन की रफ्तार कभी धीमी और कभी तीव्र हो; लेकिन परिवर्तन समाज में चलनेवाली एक सतत प्रक्रिया है।

(2) सामुदायिक परिवर्तन ही वस्तुतः सामाजिक परिवर्तन है। इस कथन का मतलब यह है कि सामाजिक परिवर्तन का नाता किसी विशेष व्यक्ति या समूह के विशेष भाग तक नहीं होता है। वे ही परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन कहे जाते हैं जिनका प्रभाव समस्त समाज में अनुभव किया जाता है। संक्षेप में सामाजिक परिवर्तन की धारणा वैयक्तिक नहीं, वरन् सामाजिक है। यह विचार थोड़ा विवादास्पद भी हो सकता है, पर अधिकांश समाजशास्त्री इस बात को मानते हैं।

(3) सामाजिक परिवर्तन के विविध स्वरूप होते हैं। प्रत्येक समाज में सहयोग, समायोजन, संघर्ष या प्रतियोगिता की प्रक्रियाएँ चलती रहती हैं, जिनसे सामाजिक परिवर्तन विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। परिवर्तन कभी **एक-रेखीय (Unilinear)** तो कभी **बहुरेखीय (Multilinear)** होता है, अर्थात् परिवर्तन कभी समस्यामूलक होता है, तो कभी कल्याणकारी। परिवर्तन कभी चक्रीय होता है, तो कभी उद्विकासीय। कभी-कभी सामाजिक परिवर्तन क्रांतिकारी भी हो सकता है। परिवर्तन कभी अल्प अवधि के लिए होता है, तो कभी दीर्घकालीन।

(4) सामाजिक परिवर्तन की गति अनियमित तथा सापेक्ष (Irregular and Relative) होती है। समाज की विभिन्न इकाइयों के बीच परिवर्तन की गति भी समान नहीं होती है। सामाजिक संरचना के कुछ तत्त्वों में परिवर्तन की गति समान नहीं होती है। सामाजिक संरचना में समाज के सभी अंग समान रूप से गतिशील नहीं होते हैं, जैसे– ग्रामीण समुदाय की अपेक्षा शहरी समुदाय में परिवर्तन कुछ ज्यादा तेज गति से होता है। दुनिया के सभी समाजों में परिवर्तन समान रूप से नहीं होता है। किसी समाज में परिवर्तन की गति धीमी होती है तो किसी में तेज। इसीलिए कहा जाता है कि पश्चिमी दुनिया का समाज भारतीय समाज की तुलना में ज्यादा गतिशील रहा है। परिवर्तन के एक ही कारक का प्रभाव अलग-अलग समाजों में अलग-अलग होता है, अर्थात् परिवर्तन का प्रत्येक कारक हर समाज में समान रूप से प्रभावकारी नहीं होता है। परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका हम तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

(5) सामाजिक परिवर्तन के अनेक कारक होते हैं। समाजशास्त्री मुख्य रूप से सामाजिक परिवर्तन के जनसांख्यिकीय (Demographic), प्रौद्योगिकीय (Technological), सांस्कृतिक (Cultural) एवं आर्थिक (Economic) कारकों की चर्चा करते हैं। इसके अलावा सामाजिक परिवर्तन के अन्य कारक भी होते हैं, क्योंकि मानव-समूह की भौतिक एवं ग़ैर-भौतिक आवश्यकताएँ अनन्त हैं और वे बदलती रहती हैं।

(6) सामाजिक परिवर्तन की कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। इसका मुख्य कारण यह है कि अनेक आकस्मिक कारक भी सामाजिक परिवर्तन की स्थिति पैदा करते हैं। इसलिए सामाजिक परिवर्तन के निश्चित स्वरूप की भविष्यवाणी हम नहीं कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, मार्क्स ने पूँजीवाद के अन्त में समाजवाद के उत्थान की भविष्यवाणी की थी; लेकिन यह परिवर्तन अबतक साकार नहीं हो पाया है और न ही होने की सम्भावना है। इसी तरह हम सामाजिक सम्बन्धों, विचारों, मनोवृत्तियों, आदर्शों एवं मूल्यों में परिवर्तनों की निश्चित भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं।

विलबर्ट इ. मोर (Wilbert E. Moore, 1974) ने आधुनिक समाज को ध्यान में रखते हुए सामाजिक परिवर्तन की

Scanned with CamScanner

को छोड़कर अन्य विद्वान समाजशास्त्र से जुड़े नहीं हैं।

भारत में सामाजिक परिवर्तन

भारतीय समाज को अनेक विद्वान एक अपरिवर्तनशील समाज मानते रहे हैं। इस जड़ता को अंग्रेजों ने तोड़ा। हम परिवर्तन की चर्चा में अंग्रेजी राज के आरंभ को यानी 18वीं शताब्दी के आरंभ को एक संदर्भ बिंदु मानकर चलना चाहते हैं। उसके पहले भी परिवर्तन प्रवसन से, राजनीतिक शक्ति के बदलने से एवं अन्य कारणों से हो रहे थे।

अंग्रेजी राज के आरंभ होने एवं संघर्ष तथा सहयोग की मूल द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया जिसने अन्य समाजों की भाँति परिवर्तनों को जन्म दिया, उस समय में यह कुछ अधिक हुआ। एक ओर अंग्रेजों की कूटनीति से एवं स्वयं अपनी राजनीति से भारत के क्षेत्रीय राज्य आपस में लड़ भी रहे थे और सहयोग भी कर रहे थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी को बाद में पश्चिम के अन्य देशों से लड़ना भी पड़ा एवं समय-समय पर एक दूसरे से मिलना भी पड़ा। अंग्रेजों एवं भारतीयों में भी संघर्ष एवं सहयोग चलता रहा। पश्चिम के अन्य समाजों के समान अंग्रेज भी बड़े क्रूर एवं नृशंस थे। उन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को दबाने में क्रूरता की वे मिशालें पेश की जिसका मानवता ने बहुत कम अनुभव किया है।

परिवर्तन का एक बड़ा कारण सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन था। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ भारत में आदिवासी, किसान एवं अन्य समूह अनेक स्थानों पर आंदोलन कर रहे थे। आरंभ में कांग्रेस ने अपने औपचारिक सम्मेलन के साथ-साथ समाज सुधार सम्मेलन करने की परिपाटी को भी आरंभ किया व भारत के अभिजन ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय अभिजन ने

Scanned with CamScanner

अपनी दृष्टि एवं प्रयासों से परिवर्तन किया। योगेंद्र सिंह के अनुसार भारतीय अभिजन का आकार तुलनात्मक रूप से बहुत छोटा था परंतु इसने व्यापक भूमिका का निर्वाह किया। स्वतंत्रता के पश्चात संविधान का निर्माण करके एक आधुनिक राज्य को स्थापित किया। इन्होंने लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्तों को लागू किया। राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिये योजनाबद्ध विकास के कार्यक्रम को संगठित किया।

व्यापार ने समाज को बदला। उद्योग भारत में कमजोर रहे एवं हैं। उद्योग का आर्थिक और राजनीतिक महत्व है। उद्योगपति देश की अर्थव्यवस्था एवं राजनीति पर हावी हैं परंतु उद्योग का विस्तार कम है। वी. वी. गिरि ने कहा कि उद्योग में काम करने वाला मजदूर गांव जाने पर भूस्वामी जैसा व्यवहार करता है। यातायात के साधनों, संचार माध्यमों, लोकतंत्र की राजनीति एवं प्रक्रिया एवं वर्तमान समय के आंदोलनों ने भारतीय समाज को परिवर्तित किया है। उदारीकरण की प्रक्रिया ने भारत में बहुत तेज परिवर्तन उत्पन्न किये हैं। उदारीकरण के कारण बाजार गांव तक पहुंचा है, महिलाओं में आत्मनिर्भरता का भाव पैदा हुआ है, पारंपरिक शिल्प खत्म हुए हैं, परिवार कमजोर हुआ है एवं विवाह की संस्था में दरार पड़नी शुरू हो गई है।

Process

भारत में परिवर्तन की प्रक्रियाएँ : भारत में अंग्रेजी राज ने एक नवजागरण को जन्म दिया। यह नवजागरण ब्राह्मण सवर्ण नवजागरण अधिक था। अंग्रेज अपनी नीति के अनुसार ऐसा करना चाहते थे कि उन्होंने मुसलमान शासकों से सत्ता हथियाया था। वे चाहते थे कि भारत में आंतरिक विरोध को बढ़ाया जाए। इसलिये एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, बंकिमचंद्र चटर्जी जैसे अफसरों एवं साहित्यकारों के माध्यम से मुस्लिम विरोध एवं हिंदू राष्ट्रवाद को बढ़ाया। उपरोक्त कारणों से परिवर्तन की जो प्रक्रियाएं चलीं उनका चरित्र एवं स्वरूप, अलग-अलग था।

(1) **आधुनिकीकरण :** भारत में आधुनिकीकरण का सूत्रपात अंग्रेजों ने किया। श्रीनिवास की धारणा है कि पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण में अंतर है परंतु पश्चिम के संपर्क से ही भारत में व्यक्तिवाद, युक्तिपूर्णता, सार्वभौमिकता, धर्मनिरपेक्षता एवं समानता के मूल्य कम या अधिक आरंभ हुए। आधुनिकता का अर्थ धर्म का समाप्त होना भी है। भारत में यह नहीं हुआ। सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में धर्म की जो भूमिका एवं वर्चस्व था वह जरूर बहुत कमजोर हो गया। अंग्रेजी राज में ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी बढ़ा। आजादी के बाद ये और बढ़ गये। भारत में अर्थव्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, संस्कृति में आधुनिकता का तत्व है। ये सभी आधुनिक नहीं हुए। भारत में आधुनिकता के आर्थिक एवं राजनीतिक आधार मजबूत नहीं हैं। इसलिये भारतीय आधुनिकता पनीला है, इसमें परंपरा गुंथी है।

पश्चिमीकरण : यह धारणा एम. एन. श्रीनिवास ने 1952 में दिया। अंग्रेजों के दो सौ वर्षों के राज से भारत में जो भी परिवर्तन हुए उसे पश्चिमीकरण कहते हैं। भारत के सवर्ण समूह के लिये पश्चिमीकरण की प्रक्रिया उर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया थी। पश्चिमीकरण में आधुनिकता के तत्व थे। पश्चिमीकरण के कारण अंग्रेजी भाषा, पश्चिम की शिक्षा, पश्चिम की विचारधारा, पश्चिमी जीवन शैली एवं पश्चिम की अर्थव्यवस्था तथा राज्य व्यवस्था का प्रचलन हुआ। पश्चिमीकरण की प्रक्रिया से व्यक्तिवाद, युक्तिपूर्णता, सार्वभौमिकता, संगठित प्रयास आदि मूल्य प्रचलित हुए। ये मूल्य आधुनिकता के भी थे। पश्चिम की जीवन शैली, अंग्रेजी भाषा आदि आधुनिकता के तत्व नहीं हैं।

(2) **नवपश्चिमीकरण (Neowesternization):** किसी खास विद्वान ने इस शब्द का आरंभ नहीं किया। इसका अर्थ है अंग्रेजी राज के समाप्त हो जाने के बाद जब पश्चिमीकरण से सत्ता, सुविधा, सम्मान के लाभ की आशा नहीं थी, तब भी पश्चिमी जीवन शैली एवं मानसिकता का अनुकरण भारत में होता रहा। योगेंद्र सिंह ने कहा, आजादी तक हम विलायत की तरफ हर बात के लिये देखते थे। उसके बाद अपने मार्ग निर्देश के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका की तरफ देखने लगे। यह नव पश्चिमीकरण है।

(3) **भारतीयकरण (Indianization):** हमने आदिवासी समाज में परिवर्तन की चर्चा में इस धारणा का प्रयोग किया है। इसका आरम्भ अंकलेश्वर अयप्पन ने किया। इसे इतिहासकार देवराज चनाना ने आगे बढ़ाया। इस प्रक्रिया को न केवल हिंदुत्ववादियों ने बल्कि गांधी एवं गांधीवादियों ने हिंदू राष्ट्रीयता के साथ जोड़ दिया। इसलिये यह प्रचलन से बाहर हो गया। यह एक उपयोगी धारणा है। भारत में तमाम अवरोधों के बावजूद एक साझी संस्कृति विकसित हो रही है। आम जीवन में इसे गंगा जमुना की संस्कृति कहते हैं। इस साझी संस्कृति के विकास की प्रक्रिया को ही हम भारतीयकरण कहते हैं। यह नैतिक दृष्टि से एवं नीतिगत दृष्टिकोण (Ethical Point of View) से निष्पक्ष है। हमने पहले भी कहा इसके चार आयाम हैं:

(क) भारत में क्रमशः समान लक्ष्यों एवं आदर्शों का विकास हो रहा है। इसे आकांक्षाओं की समानता (Parity of Aspiration) कह सकते हैं। सवर्ण एवं दलित, हिंदू, मुस्लिम, ईसाई एवं सिक्ख एवं आदिवासी युवा अपनी-अपनी वर्गीय स्थिति के अनुसार एक समान लक्ष्य की ओर उन्मुख हैं।

(ख.) देश में समान नायकों, प्रतीकों का विकास हो रहा है। अमिताभ बच्चन, सलमान खां के चहेते भारत के सभी क्षेत्रों में हैं। पूरे देश में फैशन के एक जैसे स्वरूप प्रचलित हो रहे हैं।

Scanned with CamScanner

(ग) देशभर में एक जैसी संरचनाओं का विकास हो रहा है। पूरे देश में एकल परिवार बढ़ रहे हैं, महिलाएँ स्वतंत्र एवं सक्रिय हो रही हैं।

(घ) समान नियम, समान जीवन शैली प्रचलित हो रही है। देश के एक भाग की पोशाक जैसे सलवार सूट दक्षिण में, साड़ियाँ पंजाब में प्रचलित हो रही हैं।

(4) **पारम्परीकरण :** भारत में सभी समूहों एवं क्षेत्रों में प्रचीन शास्त्रीय व्यवहार एवं जीवन मूल्यों को फिर से वापस लाने की प्रवृत्ति कमजोर या मजबूत स्वरूप में प्रचलित है। श्रीनिवास ने हिंदू एवं आदिवासी निम्न श्रेणियों में प्रचलित इस प्रक्रिया को संस्कृतिकरण कहा है। आदिवासी क्षेत्रों की ऐसी प्रक्रिया को बहुत बार जनजातीयकरण कहते हैं। आदिवासी समूहों में हिंदू चिह्नों एवं प्रतीकों का प्रचलन जिसे हिंदूकरण कहते हैं, पारंपरीकरण ही है। मुसलमानों में ऐसी पारंपरिक प्रक्रिया को इस्लामीकरण कहते हैं।

(5) **संस्कृतिकरण :** संस्कृतिकरण की धारणा श्रीनिवास ने 1952 में अपनी पुस्तक 'सोसायटी एण्ड रीलिजन एमंग कूर्गस ऑफ साउथ इंडिया' के दूसरे संस्करण में दिया। उन्होंने पहले 1942 में ब्राह्मणीकरण की धारणा दिया था। ब्राह्मणीकरण की धारणा का सर्वप्रथम प्रयोग 1930 में अंकलेश्वर अयप्पन ने किया था। परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में संस्कृतिकरण का अर्थ ब्राह्मण शास्त्रीय जीवन शैली एवं जीवन मूल्यों को अपनाना है। श्रीनिवास ने इसे मूलतः सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया कहा है। ब्राह्मणवादी पूर्वाग्रह के कारण श्रीनिवास की आलोचना की गई। श्रीनिवास ने कहा, संस्कृतिकरण के माध्यम से राष्ट्रीय एकता कायम की जा सकती है।

(6) **इस्लामीकरण :** मुसलमानों में ठीक संस्कृतिकरण के समान तो नहीं परंतु इसी प्रकार की इस्लामीकरण की धारणा प्रचलित है। इस धारणा के संबंध में मुसलमान पिछड़ी जातियां एवं दलित जातियां अशराफों यानी मुस्लिम उच्च जातियों पर पूर्वाग्रह का आरोप लगाते हैं। सरल शब्दों में जब कोई निम्न जाति का मुसलमान पैसे वाला हो जाता है तब शास्त्रीय इस्लामी जीवन शैली एवं व्यवहार अपना लेता है। इसके संबंध में एक लोकप्रिय कविता में यह भी कहा गया कि, इस साल फसल अच्छी हुई है, मैं जुलाई से शेख हो गया हूँ। इन्साह अल्लाह अगले साल यदि फसल अच्छी हुई मैं शेख से सैयद हो जाऊँगा।

(7) **महान परंपरा एवं लघु परंपरा (Great Tradition and Little Tradition):** राबर्ट रेडफील्ड ने मैक्सिको में अपने अध्ययन के दौरान परिवर्तन की व्याख्या के लिये इन धारणाओं को विकसित किया। महान परंपरा व्यापक, शास्त्रीय उच्च वर्गीय नियमों एवं व्यवहार के स्वरूपों को कहते हैं। लघु परंपरा क्षेत्रीय एवं स्थानीय, निम्न वर्गीय एवं अनपढ़ तथा अशास्त्रीय नियमों तथा जीवन शैली को कहते हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया में महान परंपराओं का अनुकरण, अधिग्रहण लघु परंपराएं करती हैं।

इन धारणाओं का प्रयोग भारत के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने किया। योगेंद्र सिंह ने व्यापक हिंदू धर्म एवं इस्लाम धर्म के शास्त्रीय नियमों, व्यापक रूप से प्रचलित शास्त्रीय भाषाओं, मूल्यों को महान परंपरा कहा एवं स्थानीय बोली, वीर गाथाओं, किस्से, कहानियों को लघु परंपरा कहा। लघु परंपराएं महान परंपराओं को स्थानीय संदर्भ में अपनाती हैं। इस धारणा पर भी उच्च वर्गीय पूर्वाग्रह का आरोप लगाया जाता है। टी. के. यूमन ने कहा कि यह उच्चवर्गीय वर्चस्व को स्थापित करने वाली धारणा है।

(8) **सार्वभौमीकरण एवं स्थानीयकरण (Universalization and Parochialization):** राबर्ट रेडफील्ड के शिष्य मैकिम मैरियट ने अलीगढ़ के पास किशनगढ़ी गांव का अध्ययन करके इन धारणाओं को दिया। उनके अनुसार यदि कोई स्थानीय नियम, सामाजिक स्वरूप व्यापक रूप से प्रसारित हो जाता है एवं प्रतिष्ठित हो जाता है जैसे तुलसीदास का रामचरित मानस एक स्थान में रचा गया एवं उत्तर भारत के बड़े क्षेत्र में फैल गया, तब यह सार्वभौमीकरण है। इसके विपरीत केंद्रीय स्तर पर शक्ति समूहों की कोई केंद्रीय व्यवस्था एवं तत्व यदि स्थानीय स्तर पर एक स्थानीय संदर्भ में अपनायी जाती है तब वह स्थानीयकरण है। उदाहरण के लिये लगान फिल्म के गाने भारत के प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय भाषाओं में गाये जाते हैं। उसकी धुनों को स्थानीय बोली में अपना लिया गया। मैरियट ने रेडफील्ड की धारणाओं का प्रयोग करते हुए कहा, जब लघु परंपरा महान परंपरा के तत्वों को अपने ढंग से बदल कर एवं ढालकर अपनाती है तब यह स्थानीयकरण है, जब महान परंपरा में लघु परंपरा के तत्व अपनाये जाते हैं, तब वह सार्वभौमीकरण है। STOP

भारत में क्राँतियाँ : क्रांति एक रूमानी शब्द है। इससे रोमांच होता है। थेडा स्कोपाल ने कहा क्रांतियाँ सभी जगहों पर नही होती हैं। रूस में क्रांति हुई, जर्मनी में नहीं हुई। फ्रांस में क्रांति हुई, इंग्लैंड में नहीं हुई। भारत में क्राँति हुई नहीं। क्राँति शब्द से बड़ा मोह है। कोई आसमान में क्राँति लिखता है तो कोई कविताओं में क्राँति गढ़ता है। क्राँति के अभाव में हम लोगों ने कृषि के विशिष्ट क्षेत्रों में हुई अभूतपूर्व प्रगति को क्राँति कहा है।

हरित क्राँति : 1960 के दशक में मुख्य रूप से रबी फसलों में, पंजाब, हरियाणा एवं पश्चिम उत्तर प्रदेश में, उन्नत बीजों, कृषि की नयी तकनीकों से जो अभूतपूर्व वृद्धि हुई उसे हरित क्राँति कहते हैं। इसके सूत्रधार एम. एस. स्वामीनाथन रहे हैं। बाद में यह अन्य फसलों एवं क्षेत्रों में फैली। 90 के दशक

Scanned with CamScanner